आज की साकार मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---- Date:21-10-14

हम पदमापदम भाग्यशाली आत्माओं को आत्मा, परमात्मा और सारी सृष्टि चक्र का ज्ञान देकर, सहज योगी और स्वदर्शन चक्रधारी बनाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, बाबा तुम्हें जो सुनाते हैं, उस एक-एक बात को धारण करने से ही तुम पदमापदम भाग्यशाली बनते हो. बाप जो नॉलेज देते हैं उसे बुद्धि में रखना, स्वदर्शन चक्रधारी बनना ही पदमापदम भाग्यशाली बनना हैं. इस नॉलेज से ही तुम गुणवान बनते हो. बाबा की हरेक मुरली हमें दो मुख्य बातें धारण करवाती हैं. स्वयं को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा को याद करना और साथ में आत्मा का स्वदर्शन चक्र को भी फिराना. इसे ही हम सहज योगी और स्वदर्शन चक्रधारी बन जायेंगे. बाबा का दिया हुआ ईश्वरीय ज्ञान को बुद्धि में रखने से ही हम गुणवान आत्मा भी बन जायेंगे.

हमें बाबा की सहज याद सिखलाकर और स्वदर्शन चक्रधारी बनाने वाली कुछ पॉइन्टस को आज की मुरली से निकालकर पढ़ेंगे तो हमें दोनों बातों की प्रैक्टिस होती जायेंगी.

- रुहानी बाप को अंग्रेजी में कहा जाता है स्प्रीचुअल फादर. जब हम आत्माये सतयुग में होगी तो वहॉ अंग्रेजी आदि दूसरी कोई भाषा नहीं होगी. सतयुग में तो हमारा राज्य होगा वहॉ तो हमारी जो भाषा होगी वही चलेगी. फिर बाद में वह भाषा बदलती जायेंगी. अभी कलियुग के अन्त में तो अनेका-अनेक भाषा ये हैं. जैसा-जैसा राजा वैसी-वैसी उनकी भाषा चलती है.

- हरेक मनुष्य के शरीर में आत्मा है. अभी उस आत्मा में ५ विकार प्रवेश हैं. शरीर में नहीं, आत्मा में ५ विकार अथवा भूत प्रवेश होते हैं. जब हम आत्माये सतयुग में है तो वहॉ यह ५ भूत नहीं हैं. सतयुग को कहा जाता है डीटी वर्ल्ड और यह है डेविल वर्ल्ड. कितना दिन और रात का फर्क है.

- अभी हम आत्माये चेंज हो रहे हैं. वहॉ सतयुग में हमारे में कोई भी विकार, कोई अवगुण नहीं रहता. वहॉ हम आत्माये सर्वगुण सम्पन्न सोले कला सम्पूर्ण होते है. फिर धीरे-धीरे हम नीचे उतरते हैं. अब मुझ आत्मा को मालूम पड़ा है कि कैसे यह ८४ का चक्र फिरता है. अब मुझ आत्मा को स्व का दर्शन हुआ है अर्थात यह चक्र का ज्ञान हुआ हैं. अब मुझे यह चक्र को सदा के लिए बुद्धि में रखना हैं.

- रुहानी बाप हमारे भारत में ही आकर हमें यह रुहानी नॉलेज देते है. हमारा भारत जब स्वर्ग था तो हमारा एक ही देवी-देवता धर्म था और कोई भी धर्म नहीं था. यह देहली का नाम भी परिस्तान था. अभी तो नई और पुरानी देहली कहते है. फिर न पुरानी, न नई देहली होगी. इसको तो परिस्तान कहा जायेगा. यहॉ ही लक्ष्मी-नारायण का राज्य होगा, हमारा ही राज्य होगा और कोई राज्य नहीं होगा.

- इस कलियुग के अन्त में हम सब आत्माये पाप आत्माये बन गये हैं. सतयुग में तो थे पुण्य आत्माये. अभी बाबा आये है हमें पाप आत्मा को पुण्य आत्मा बनाने, जिनकी हम शिवरात्रि भी मनाते हैं. बाबा ने हमें समझाया है की शिवरात्रि भी क्यों मनाते है. हम आत्माये इस ५००० वर्स के चक्र में, सुख और दुख के खेल में पार्ट बजाते हैं. सुख को कहा जाता है दिन और दुख को कहा जाता है रात. तो रात और दिन के बिच में आता है संगम. जब की परमात्मा शिव आकर वापस हम आत्माओं को अन्धीयारे से निकाल सोझरे में ले जाते हैं.

- कलियुग में जब बच्चा जन्म लेता है तो पहले बाप से योग होता है फिर ५ वर्ष के बाद टीचर से योग लगाना पड़ता है फिर वानप्रस्थ अवस्था में गुरु से योग लगाना पड़ता है. अब संगम पर बाबा हमारा बाप भी बनते है, टीचर भी बनते है और सतगुरु भी वही बनते हैं. तो तीनों के रुप में हमें एक बाबा को ही याद करना हैं. यह तो मुझ आत्मा के लिए कितना सहज है. फिर सतयुग में बाप से और टीचर से योग होता है वहॉ गुरु की दरकार नहीं रहेगी क्योंकि सब आत्माये सद्गति में हैं.

- कल्प पहले भी बाबा ने कहा था कि मनमनाभव. यह है महामन्त्र, माया पर जित पाने का. बाबा ने हमें इसका भी सही अर्थ समझाया हैं. गाया भी जाता है सर्व का सद्गति दाता एक. वह कोई मनुष्य या देवता नहीं हो सकता. सतयुग में तो सुख ही सुख है तो वहॉ कोई भक्ति करते ही नहीं. भक्ति भी की जाती है भगवान से मिलने के लिए. स्वर्ग में तो हम आत्माये २१ जन्मो का वर्सा भोगते हैं. यहॉ तो है अथाह दुख तो घड़ी-घड़ी कहते है भगवान रहम करो. कलयुगी दुनिया सदैव नहीं रहेगी. सतयुग-त्रेता पास्ट हो गया, फिर होंगे.

इस तरह से बाप और चक्र को बुद्धि में रखने से ही हम पदमापदम भाग्यशाली बनेंगे.

ॐ शांति.